International Journal of Education and Science Research Review
Volume-1, Issue-1 February 2014 ISSN 2348-6457

सोनागिरि के जैन मन्दिरों में प्रतीकों (मांगलिक चिन्हों एवं अलंकरण) का कलात्मक स्वरूप

शोधार्थी : निधि सिंह
निदेर्शिका : डॉ0 नीलम शर्मा,
बैकुण्ठी देवी महिला डिग्री कॉलिज, आगरा

धार्मिक व प्रतीकात्मक रूप

प्रतीकीकरण मनुष्य का सहज स्वभाव है। भाषा का प्रारम्भिक स्वरूप प्रतीकात्मक ही था। मनुष्य ने रेखाओं द्वारा चित्र खींचना शीघ्र ही सीख लिया था। उसके चित्रमय प्रतीकों से पहले चित्र लिपि और अन्ततः चित्रलिपि से वर्णमाला का विकास हुआ। गुहा निवासी आदिम मनुष्य आकर्षित करने वाले पशु-पक्षियों को पत्थरों से चट्टान आदि पर अंकित करता था, यही प्रतीक का आरम्भ है। ज्यों-ज्यों मनुष्य के विचार विकसित होत गये, त्यों-त्यों उसके प्रतीकों के रूप विकसित हात गये, उनकी संख्या बढ़ती गई। प्रतीकों की अपनी विशेषतायें हैं, कार्य हैं, उनका महत्व हर क्षेत्र में है। धर्म हो, दर्शन हो, साहित्य, राजनैतिक मनोविज्ञान अथवा कला हो, प्रतीक अपने स्वरूप व उद्देश्य के स्थान पर क्रियाशील हैं।

एक विशेष बिम्ब बार-बार दोहराये जाने पर प्रतीक बन जाता है। निःसंदेह प्रत्येक बिम्ब के भीतर एक प्रतीक अन्तर्निहित है और व्यापक प्रयोगों में जैसे-जैसे वह अमूर्तता की ओर बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे उसकी प्रतीकात्मकता स्पष्ट होती है। उदाहरणतः प्राचीन भवनों व मंदिरों के शिखर उल्टे कमलनाल से आवेष्ठित दिखते हैं कमलकाल ऊपर की ओर दिखाई देती है। इस संरचना के पीछे एक यौगिक तथ्य छिपा हुआ है। मानव शरीर के भीतर नाड़ियों ने उल्टा कमल बना रखा है यदि मानव चाहे तो योगाभ्यास के द्वारा इस उल्ट क्रम को सीधा कर सकता है। ऊपर की नाल को नीचे ला सकता है। योग के इस महान तत्व को शिवालयों, भवनों और चैत्यों आदि में दर्शाया गया है। अतः 'उल्टा कमल' एक महत्वपूर्ण यौगिक क्रिया का प्रतीक है जिसे कल्पसूत्र चित्रकार ने भी अपने चित्रांकन में स्थान दिया है।

प्रतीक भावना प्रधान होते हैं। भावनाओं से प्रतीकों का सृजन होता है। भावना का आधार बुद्धि है और बुद्धि का निर्माण संस्कारों से होता है। संस्कार कर्मानुसार बनते हैं। आशय है कि जो कर्म से ही अच्छी योनि में जन्म मिलता है और क्योंकि कर्म आचरण से बनता है, आचरण से धर्म एक पथ है, जिस पर चलकर मानव रूपी पथिक उस परम शक्ति में व्याप्त हो जाता है, जो सत्य है, नित्य है, शाश्वत है, किन्तु दृष्टिगोचर नहीं है, उसके लिये मानव ने बोधगम्य प्रतीकों की रचना की है जैसे गीता में जगत को अश्वत्थ (पीपल) वृक्ष के रूप में वर्णित किया है। इसी प्रकार कल्पसूत्र पाण्डुलिपि में अनेक धार्मिक प्रतीकात्मक रूपों का चित्रमय अंकन हुआ है।

जैन चित्रण परम्परा में कुछ प्रतीकों में स्वास्तिक, वृक्ष, कमल, पूर्ण कुम्भ (जलपात्र), नाग, सिंह, वृषभ, हाथी, हंस आदि का अध्ययन अग्र प्रकार से है:

स्वास्तिक : पूर्ण या अबाहु स्वास्तिक का विकास मूलतः अबाहु+स्वास्तिक से ही हुआ है। धन चिन्ह (+) और गुणन चिन्ह (×) में भी इसी का स्वरूप है। स्वास्तिक विश्वव्यापी व सभी देशों में मिलने वाला प्राचीन प्रतीक है। चार दिशाओं में व्याप्त विश्व मण्डल के चतुर्भुजी रूप का प्रतीक है जिसका सम्बन्ध सूर्य से है। यह मानव और विश्व का सर्वोत्तम मांगलिक चिन्ह है। स्कन्ध पुराण में विष्णु के दाहिने व बाँये पैर में कुल 19 चिन्हों में से स्वास्तिक भी एक चिन्ह है। जैन धर्म की उपासना पद्धति में अष्ट मांगलिक प्रतीकों के अन्तर्गत स्वास्तिक का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में जैन धर्म के अतिरिक्त बाद्ध व वैष्णव धर्मों में भी स्वास्तिक को मंगल प्रतीक माना गया है। यह उज्जवलता का प्रतीक है।

जलकलश : पानी से भरा मिट्टी का घट, स्वास्तिक और अन्य अलंकरणों से सुसज्जित हो तथा जिसका मुख आम्र या अशवत्थ आदि की पत्तियों से ढ़का हो और उसके ऊपर लाल वस्त्र लिपटा नारियल हो, मंगल का सूचक होता है। भारतीय संस्औति वाली पहचान वाला यह मंगल कलश वर्तमान समय में भी शुभ अवसरों पर घर के दरवाजों पर रखा जाता है। अन्य धार्मिक अनुष्ठानों एवं सांस्औतिक रीति रिवाजों में इसका प्रयोग होता है। पवित्र कार्यों से पूर्व जलयुक्त कलश में आम्र पत्र लगाकर इस पर लाल वस्त्र में लिपटा नारियल रखने पर लक्ष्मी व विष्णु की प्रतिस्थापना की जाती है, ऐसा विश्वास किया जाता है कि इनमें लक्ष्मी और विष्णु का वास है। कल्पसूत्र पाण्डुलिपि चित्रों में इस मांगलिक चिन्ह के अनेक स्वरूप चित्रित किये गये हैं।

जैन हस्तलिखित ग्रन्थों में जलकलश की कल्पना मानवाऔति के रूप में की जाती है जो नेत्रों से सुसज्जित है और जिसमें फूल-पत्तियों की श्रृंखला भी है, उसे 'मेखली घट' कहते हैं। सोनागिरि में भी एक मन्दिर के चारों ओर कलश एवं नारियल दृष्टिगोचर हैं।

15वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक कल्पसूत्र चित्रकार ने 'माता के चौदह स्वप्न' विषयक चित्र में जलपात्र चित्रित किया है।

सोनागिरि में शिल्प ने धार्मिक प्रतीकात्मक रूपांकन में मानवीय जीवन से जुड़े प्रत्येक पक्ष को प्रतीक बनाकर चित्रित करने का प्रयास किया है। मानव व प्रऔति अटूट रूप से जुड़े हैं। प्रऔति प्रदत्त पशु-पक्षी जैसे सिंह, वृषभ, मयूर, पुष्प आदि का अध्ययन एक बार पुनः प्रतीकात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत हैं।

भारतीय चित्रकला एवं शिल्प कला प्राऔतिक प्रतीकों को आदिकाल से चित्रित करती आ रही है। भरहुत में चित्रित बौद्ध गाथा की वेदिकायें तथा सांची तोरण पर गजलक्ष्मी की आऔतियाँ भारतीय चित्रकला में हाथी के महत्व को स्थापित करती हैं। हाथी की आऔति से कला गाम्भीय व वैभव भाव प्रदर्शित करता है। हाथी तीर्थंकर आदिनाथ का लक्षण चिन्ह है। हाथी का काला वर्ण मेघ प्रतीक होता है। यद्यपि कल्पसूत्र चित्रकार ने केवल काले वर्ण से ही हाथी को चित्रित नहीं किया है वरन् विविध वर्णों में विविध सज्जा के साथ चित्रित किया है। रूपांकन में रूपकार ने विविधतापूर्ण दृष्टि का परिचय दिया है।

भारतीय संस्औति में वृषभ व गाय जनजीवन के सुख एवं स्वास्थ्य के प्रतीक हैं। प्रागैतिहासिक युग से ही वृषभ हमारे जीवन का अंग है। पशुपतिनाथ का नन्दी, मोहनजोदड़ों की मुद्राओं पर भी उकेरा गया है। वृषभ उन्नत समाज का प्रतीक चिन्ह है। भारतीय विचारधारा में नन्दी सत्य एवं अहिंसा का प्रतीक रहा है। सम्भवतः इसी विचारधारा से प्रेरित होकर जैन सम्प्रदाय के लोगों ने वृषभ को आदि तीर्थंकर ऋषभनाथ के वाहन के रूप में ग्रहण किया है।

सृष्टि की रचना में पोषक तत्व अन्न, घी, दूध तथा वर्षा का प्रतीक वृषभ है। इसके अतिरिक्त धर्म प्रतीक होने के कारण संसार में जहाँ कहीं भी वृषभ की मूर्ति बनी है वहाँ धर्म के प्रतीक के रूप में ही बनी है। सोनागिरि में वृषभ का चित्रांकन अधिकांश चित्रों में किया गय है। वृषभ चित्रांकन भी शिल्पकार को प्रिय रहा है।

पशु जगत में सबसे अधिक शक्तिशाली पशु सिंह है 'शतपथ ब्राह्मण' कथा में सिंह को शक्ति का प्रतीक माना गया है। भारतीय चित्रकार ने भी शक्ति प्रदर्शन के लिये सिंह का चित्रांकन किया है। देवीय प्रतिमाओं, अशोक स्तम्भों व आलेखनों में चित्रित सिंह स्वयं में शक्ति का प्रतीक है। अतः सिंह का चित्रांकन एक प्रतीकात्मक सम्बन्ध निश्चित करता है। सिंह शक्ति के साथ बुद्धि का भी प्रतीक है। जैन चित्रकला, शिल्पकला में सिंह का चित्रांकन देखा जा सकता है। जैन चित्रकला में शक्ति प्रतीक सिंह महावीर स्वामी के वाहन के रूप में चित्रित किये गये हैं जो स्वयं में शक्ति का प्रतीक है।

पौराणिक कथाओं में प्रायः शेषनाग विष्णु के वाहन के रूप में चित्रित किया जाता था। पौराणिक कथाओं में नागों को मृत्यु व तम का प्रतीक माना गया है। कुषाण काल में सर्प आऔतियाँ पुष्करिणी नदी के तट पर स्थापित की जाने लगी थी, क्योंकि वे पृथ्वी के नीचे जलधाराओं में अधिष्टात्री देवता माने जाते थे। बुद्ध, महावीर व औष्ण आदि युगपुरूषों के जीवन में नाग देवता की कथायें आती हैं, जैसे इन्द्र देव ने वृत्त नामक सर्प का दमन किया है। सर्प दमन की कथाओं की प्रतीकात्मक रूप में व्याख्या की जाती है। नाग, प्रऔति देवी की शक्ति का प्रतीक था अतः जैन धर्मावलम्बियों ने सर्प को धर्म का प्रतीक रूप दिया तथा चित्रकारों ने सर्प के अनेक रूपों का चित्रांकन किया। जैन धर्म ने सर्प को 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ से सम्बद्ध किया है। पार्श्वनाथ के शीर्ष पर स्थित सात फनों वाला सर्प 'अहिंसा परमो धर्मः' का सिद्धान्त को पुष्ट करता है।

पक्षियों में हंस, मोर, गरुड़, शुक, उलूक आदि का चित्रांकन भी जैन ग्रन्थों में प्रमुख स्थान रखता है। वैदिक काल से ही देव-देवियों के वाहन के रूप में ये पक्षी अमर हो गये। हंस, ब्रह्मा व सरस्वती के वाहन के रूप में चित्रित किया जाता है। नीर-क्षीर का विवेक इस पक्षी में है। आध्यात्मिक पक्ष में हंस-जीव का प्रतीक है, यह जीव प्राण शक्ति द्वारा कर्म करता है। हंस निर्विकल्प समाधि में लीन जीवनरूपी जलराशि में तैरता रहता है। हंस के इन्हीं गुणों के कारण भारतीय चित्रों में अत्याधिक प्रयोग हुआ है। अजन्ता व बाघ भित्ति चित्रों के आलेखनों में हंस लय व गति का प्रतीक बन गया है। जैन चित्रण परम्परा में भी हंस, मयूर, शुक आदि का चित्रांकन किया गया है। चित्रकार ने निरन्तर प्रयास किया कि सीमित चित्रतल पर भी प्राऔतिक पशु-पक्षी चित्रांकन द्वारा प्रऔति से अपरिमित व सुरदायिनी तादम्य जोड़े रखे।

संग्रहालय में संग्रहित कल्पसूत्रों में वृक्ष, पुष्प व लतायें अपना कलात्मक महत्व तो रखते ही हैं साथ ही उनका प्रतीकात्मक महत्व कम नहीं है। वृक्षों की पूजा आदिकाल से ही होती आ रही है। बर्डअर्ड महोदय के अनुसार यह एक अति प्राचीन प्रतीक है वृक्ष जीवन का प्रती हैं। कल्पसूत्र चित्रों में प्रतीकात्मक वृक्ष चित्रण के मूल में प्राचीन परम्परायें एवं लोक विश्वास व उपयोगिता काम र रही है। वृक्ष तथा पुष्पों का चित्रण सामान्य रूप से मिलता है। जल में विसित कमल अन्य चित्रकारों की भाँति कल्पसूत्र चित्रकारों को भी अतिप्रिय था।

सोनागिरि के उक्त चित्रों में प्रयुक्त प्रतीक, जैन शैली के मुख्य प्रतीकों में से हैं। ये प्रतीक कला की भाषा होते हैं। प्रत्येक संस्औति कुछ प्रतीकों का निर्माण करती है। जिस प्रकार फल में सारे वृक्ष का विस्तार समाया रहता है। उसी प्रकार प्रतीकां में सम्पूर्ण अर्थ समाया रहता है। प्रतीक मानों संस्औति के सूत्र ही हैं। चित्रकार ने प्रतीकों की सहायता से अध्यात्मिक भावों को अभिव्यक्त किया है। धार्मिक व पौराणिक प्रतीकों की अभिव्यक्ति के कारण ही चित्रों में आध्यात्मिक व कलात्मक भाव मुखरित हो उठे हैं।

References:

1. Anand, M.R. : The Hindu View of Art, Bombay, 1957.
2. Anand, Mulkraj : Jaina Miniatures, Album of Indian Painting, Delhi, 1973.
3. Banergee, P. : Early History of Jainism, Io-Asian Culture Delhi Vol. 19, Jan. 1970.
4. Battacharya,S.K.: The story of Indian Art, Delhi, 1974.
5. Barret, D & Gray, Basil & Cooamrasmami, A.K.: An illustrated Jaina Manuscript, B.NM.F.A., Bostan, Vol. 33, No. 195, Feb., 1935.
6. Brown W. Norman : A decriptive and illustrated catalogue of Miniature paintings of the Jain Kalpsutra, Washington, 1937.
7. रामजीत जैन एडवोकेट : सोनागिरि वैभव
8. के0 सी0 जैन : सोनागिरि दिग्दर्शन
9. बलभद्र जैन : भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ भाग (1)